"अरहर"

भूमि का चयन एवं खेत की तैयारी :–

- अरहर हेतु दोमट भूमि एवं मध्यम काली मिट्टी अच्छी मानी जाती है।
- दोमट भूमि जिसका पी.एच. मान 7 से 8 के बीच हो एवं समुचित जल निकास हो उपयुक्त होती है।
- ग्रीष्म ऋतु (मार्च–अप्रैल) में मिट्टी पलटने वाले हल से 3 वर्ष के अन्तराल पर गहरी जुताई करें।
- रबी फसल की कटाई के तुरन्त बाद कल्टीवेटर द्वारा 1 से 2 आड़ी खड़ी जुताई करें।
- वर्षा होने पर कल्टीवेटर द्वारा 1 से 2 जुताई करके पाटा चलाना चाहिए, जिससे मिट्टी भुरभुरी हो जाऐ।

उन्नत किस्में :–

- **जल्दी पकने वाली** (120 से 140 दिन) – आई.सी.पी.एल.–151 (जागृति), प्रभात, पूसा अगेती, उपास–120
- **मध्यम समय में पकने वाली** (150 से 170 दिन) – आई.सी.पी.एल.–87 (प्रगति), पूसा–33, जे.के.एम.–189, टी.जे.टी.–501, जे.ए.–4, आई.सी.पी.एल.–87119 (आशा)

बोने का समय :–

- बुआई का उपयुक्त समय 15 जून से 30 जून है तथा जुलाई के प्रथम सप्ताह तक बौनी कर सकते हैं।

बीज दर :–

- **शीघ्र पकने वाली जातियॉ** :– 25 – 30 कि.ग्रा./हेक्टेयर
- **मध्यम पकने वाली जातियॉ** :– 15 – 20 कि.ग्रा./हेक्टेयर

बीजोपचार :–

- थायरम + कार्बेन्डाजिम (2:1) के 3 ग्राम मिश्रण से प्रति किलोग्राम बीज को उपचारित करने के पश्चात् बीज को राइजोबियम (10 ग्राम/कि.ग्रा. बीज) एवं पी.एस.बी. कल्चर (10 ग्राम/कि.ग्रा. बीज) से उपचारित करें।

बुआई की विधि :–

- बुआई कतारों में करनी चाहिये। शीघ्र पकने वाली किस्मों में कतारों एवं पौधों की दूरी 45x20 से.मी. तथा मध्यम अवधि की किस्मों में 60x20 से.मी. रखें।
- बीज की बुआई 4 से 5 से.मी. गहराई पर करें।
- अरहर को चौड़ी मेढ़ नाली पद्धति में बोना नमी के संरक्षण एवं जल निकास के लिए लाभकारी होता है तथा उपज अधिक मिलती है।
- बीज बोते समय खेत में उचित नमी होना आवश्यक है।

खाद एवं उर्वरक प्रबंधन :–

- 8–10 टन प्रति हेक्टेयर गोबर की खाद 2 वर्ष के अंतराल में डालना चाहिये।
- बुआई के समय 20 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 60 कि.ग्रा. स्फुर तथा 20 कि.ग्रा. पोटाश तथा 20 कि.ग्रा. सल्फर प्रति हेक्टेयर देना चाहिये।
- स्फुर की मात्रा एस.एस.पी. देकर पूरी की जा सकती है। ऐसा करने से सल्फर की पूर्ति भी हो जायेगी।
- भूमि में जस्ते की कमी होने पर 25 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट/हेक्टेयर का प्रयोग चार फसल बाद दोहरायें।

जल प्रबंधन :–

- पहली हल्की सिंचाई फूल आने पर एवं दूसरी सिंचाई फलियॉ बनने की अवस्था पर करना चाहिये।

खरपतवार नियंत्रण :–

- पेन्डीमिथलिन 38.7 प्रतिशत (स्टाम्प एक्सट्रा) 1750 मि.ली. 500–600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर बुवाई के बाद 2 से 3 दिन के अंदर प्रयोग करने से वार्षिक घास कुल एवं कुछ चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों का नियंत्रण किया जा सकता है।

कीट नियंत्रण :–

- **फली मक्खी** – डायमिथोएट 30 ई.सी. 1500 मि.ली. 500 लीटर पानी का घोल बनाकर छिड़काव करें।
- **फली छेदक इल्ली** – क्विनालफॉस 25 ई.सी. या क्लोरपायरीफॉस 20 ई.सी. 1500 मि.ली. दवा 500 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

रोग नियंत्रण :–

- **उकठा रोग –**
  - रोकथाम हेतु रोगरोधी किस्में जैसे जे.के.एम.–189, आशा या टी.जे.टी. –501 की बुआई करनी चाहिये।
  - बुआई से पहले बीजोपचार करना अति आवश्यक है।
  - गर्मी में खेत की गहरी जुताई करें।
  - अरहर के साथ ज्वार की अंतरवर्ती फसल लेने से इस रोग का सं मण कम होता है।
- **बांझपन विषाणु रोग –**
  - रोकथाम हेतु रोगरोधी किस्में लगाना चाहिये।
  - यह रोग मकड़ी के द्वारा फैलता है, इसके नियंत्रण के लिये मेटासिस्टाक्स 750 मि.ली. दवा 500 लीटर पानी में घोल बनाकर 15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करना चाहिये।

उपज :–

- अरहर की फसल से 15 से 18 क्विंटल प्रति हैक्टेयर उपज प्राप्त की जा सकती हैं।